Shri P. R. Chakraverti: What are the conditions entered into with this British firm?

Shri Iqbal Singh: We have asked them to make some experiments regarding these effluents and we have paid them about Rs. 15,000.

Dr. L. M. Singhvi: May I know whether any synthetic drug patents have been taken out by India in other countries and whether there is any proposal to exploit these patents abroad and in this country for earning more foreign exchange for this country?

The Minister of Petroleum and Chemicals (Shri Alagesan): We have not taken out any patents. It is the Russians who are assisting us in this and we shall be making sulpha and other drugs. We have not taken out any patents, but the know-how we take from the Russians and make the drugs.

SHORT NOTICE QUESTIONS

विदेशों से खाद्यान्न की सहायता

4. श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दुनिया के दूसरे देशों से खाद्यान्न के लिये भारत सरकार की अपील का विदेशों में कैसा प्रभाव पड़ा है ;

(ख) क्या कुछ देशों ने इस सम्बन्ध में कोई वायदे किये हैं ;

(ग) यदि हां, तो उनके द्वारा दी जाने जाने वाली सहायता ऋण के रूप में होगी अथवा, उपहार के रूप में ; और

(घ) जिस सहायता का वचन दिया गया था, क्या उसमें से कुछ सहायता अब तक प्राप्त हो चुकी है ?

The Minister of Food, Agriculture, Community Development and Co-operation (Shri C. Subramaniam): (a) to (d). A statement is laid on the Table of the Sabha. [*Placed in Library, See* No. LT—5714/66].

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : इस विवरण में किस किस देश से किस किस रूप में सहायता मिलेगी इस का ब्यौरा दिया गया है । लेकिन सरकार ने यह नहीं बतलाया कि सहयोग के रूप में कैसी दयनीय स्थिति भारतवर्ष की आज विदेशों में चित्रित की जा रही है जसे चौराहों पर पैसा इकट्ठा करना, स्कूलों में चन्दा करना और गिरजाघरों में दान मांगना । क्या भारत सरकार इस देश की दयनीय स्थिति से परिचित नहीं है, अथवा आज विदेशों में जिस प्रकार इस देश की अकाल को चित्रित किया जा रहा है उस का क्या सरकार की अयोग्यता से भी कुछ सम्बन्ध है । इन चीजों की रोकथाम के लिये क्या उन देशों से कहा गया है कि ऐसी स्थिति वहां नहीं है ?

Shri C. Subramaniam: Yes, Sir; it has been passed on to the ambassadors that the critical situation is not as it has been painted in some foreign press and that with all the assistance which we have already received and which we hope to receive, there is no question of any famine, starvation or starvation deaths.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : विदेशों में जो इस प्रकार का वातावरण इस सरकार की अयोग्यता, जिसे उर्दू में नालायकी कहते हैं, का परिचय देने के लिये बन रहा है, मैं जानना चाहता हूं कि क्या उसका एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि मंत्रियों के परस्पर विरोधी वक्तव्य हो रहे हैं । जैसे कि प्रधान मंत्री ने कलकत्ता एअरपोर्ट पर कहा कि अगले दो महीनों में स्थिति और भी खराब हो सकती है और सुब्रह्मण्यम् साहब का कहना है कि दो महीनों में स्थिति संभल जायेगी । इस प्रकार के मंत्री परिषद् के मंत्रियों के परस्पर विरोधी वक्तव्य हो रहे हैं । हमारे राष्ट्रपति जी ने भी कल एक भाषण में कहा कि हमारी खाद्य नीति दोषपूर्ण है । क्या सरकार उसे संभालने की दिशा में सोच रही है । ताकि मंत्री लोग कम से कम एक

भाषा में बोलना सीखे जिस से स्थिति और आगे न बिगड़े ।

Shri C. Subramaniam: Generally the lean months are April, May, June, July and August. But even for those months, we have made sufficient anticipatory preparations to meet the situation. It is going to be a difficult period, being the lean period. That is what the Prime Minister mentioned. Simply because it is going to be critical it does not mean we are not prepared to meet that.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, आपने प्रश्न भी सुना और उत्तर भी सुना । यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है ।

श्री गुलशन : मिनिस्टर साहब को मालूम होना चाहिये कि मई, जून, जुलाई और अगस्त में नई फसल आती है ।

श्री रामेश्वरानन्द : मई, जून, जुलाई और अगस्त कमी वाले महीने बतलाये गये हैं । अध्यक्ष महोदय, आप परिचित हैं कि फसल कब आती है । कल भी मंत्री महोदय ने कहा था इसी प्रकार से । उन को अनुभव नहीं है कि किन दिनों में कास्त आती है ।

Mr. Speaker: Yesterday also it was observed during the speech by the hon. Minister that May, June, July are the lean months.

श्री रामेश्वरानन्द : उन्होंने अगस्त के लिये भी कहा था ।

Mr. Speaker: But so far as Northern India is concerned that is the time when there is a glut, when the crops come up, when the rabi crops are harvested and when everybody has got enough.

श्री रामेश्वरानन्द : अध्यक्ष महोदय, दक्षिण में तो और भी पहले आती है ।

Shri C. Subramaniam: That is only with reference to wheat and, as hon. Members know, wheat forms a very small portion of the total production. What is important is the rice production, which is to the extent of 30 to 35 million tons, and other foodgrains are the major foodgrains which have to serve the entire country as a whole. Therefore, taking that into account, when the next major rice crop will only be in September-October when we will be getting the harvest, from that context, these are the lean months.

Shri H. N. Mukerjee: The Minister, of imports, told us a little earlier that the foreign press had exaggerated the conditions here. May I know, in view of what he says now, why is it that he had called a meeting of a very large number of foreign representatives in this country where a very dismal report was given to them and there were reports that this meeting had been called without the sanction of the Cabinet because this meeting had produced a very bad impression in foreign minds and President Johnson told a conference in America that he was calling a world conference to assist India, and all that was a slap in the face of the Indian administration and the Indian people? Why did he do it?

Shri C. Subramaniam: I would like to tell the hon. Member that in that meeting—I have got the text of my speech there—I said that though the situation is difficult in view of the anticipated actions we had taken the situation as under control and we would be able to avoid starvation and distress. I have also mentioned the fact that in certain sections of the foreign press there have been exaggerated publications with regard to the crisis here, and I made a request to the Ambassadors that they should bring to the notice of the respective governments that these exaggerated reports should not be taken into account in assessing the situation here.

Shri Hem Barua: Even after the Tashkent Declaration the U.S. authorities have been insisting that there should be a solution of the Kashmir problem through mutual discussions between India, and Pakistan and it is on account of that that this has been made implicitly a condition for U.S. giving us food and, at the same time, President Johnson has summoned meeting of all those countries who are willing to help us in this crisis at Washington on 23rd March. In view of all these misunderstandings on the part of these foreign countries, may I know whether the hon. Minister of Food is going to advise the Prime Minister to clarify our position when she goes to USA very shortly?

Shri C. Subramaniam: I am sure the Prime Minister is quite aware of the situation in the country and the various other things, and whatever is necessary she will take up and communicate to President Johnson. I do not think she needs my brief for that purpose. What I would like to tell the hon. Member is, as far as the food deliveries are concerned no condition was attached with regard to that.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : क्या सरकार को इस बात का पता है कि उत्तर प्रदेश के और बिहार के चावल के क्षेत्रों में चावल जाने के ऊपर प्रतिबन्ध लगे होने के कारण उन को पैसा कम मिलता है और इसीलिये वह चावल नेपाल होकर चीन पक पहुंचता है । कहीं इसी कारण से तो हमारे ऊपर यह आपत्ति नहीं आई कि हमें भूखों मरना पड़ रहा है । यह बात बिहार के मुख्य मंत्री भी पहले कह चुके हैं ।

Shri C. Subramaniam: This question realates to aid which we obtain from foreign countries. If the hon. Member wants to discuss the food situation once again, proper steps might be taken for that purpose.

श्री विश्राम प्रसाद : मंत्री महोदय को यह नहीं पता कि किस महीने में अच्छी फसल होती है . .

अध्यक्ष महोदय : यह आप किस तरह कहते हैं । वह रबी की बात नहीं कह रहे थे, बाकी अनाज की बात कह रहे थे · · · (*Interruption*).

श्री बागड़ी : क्या रबी का अनाज अनाज नहीं होता है ।

श्री विश्राम प्रसाद : मंत्रियों में यह झगड़ा है कि खाद जरूरी है या पानी । मैं यह जानना चाहता हूं . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप सवाल करें, जो करना चाहते हैं ।

श्री विश्राम प्रसाद : मैं यह जानना चाहता हूं कि जब इन मिनिस्टरों को नहीं मालूम है कि खेती की पैदावार कैसे बढ़ती है और भीख मांगते हैं दुनिया भर में तो क्या कभी उन्होंने खेती के बारे में पढ़ा भी है ?

अध्यक्ष महोदय : नेक्सट क्वेसचन, मधु लिमये ।

भूख से लोगों की मृत्यु हो जाना

\+

5. श्री मधु लिमये :
श्री किशन पटनायक :
डा० राम मनोहर लोहिया :
श्री रामसेवक यादव :
श्री कृष्णपाल सिंह :

क्या खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद तथा अन्य कुछ जिलों में भूख से लोगों की मृत्यु हुई है;

(ख) यदि हां, तो उनका क्या ब्यौरा है ; और